अध्याय- 7

निष्कर्ष एवं सुझाव

शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा शीर्षक को केंद्र बिन्दु मानकर उपयुक्त आकड़ों का संग्रहण, वर्गिकरण और अध्ययन किया गया ह तत्पश्चात व्यवस्थित आकड़ों का विश्लेषण प्रस्तुत की गया ह शोध के दौरान "ब जनजाति का नृपारिस्थितिकी विश्लेषण" से संबंधित तीन परिकल्पनाएँ बनाई गयी थी, जो संबंधित क्षेत्र में शोधार्थी को उचित मार्ग दिखाने में मदद करती थी। आकड़ों के संकलन तथा वर्गीकरण करने के बाद उनका अध्ययन और विश्लेषण उपरोक्त अध्यायों में किया जा चुका ह अतः प्रस्तुत शोध से निम्नलिखित निष्कर्षों को दर्शाया जा सकता ह-

मध्य-प्रदेश के डिंडोरी जिला के चांडा गाँव में निवास करने वाली ब जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति समूह के अंतर्गत आते हैं, जिन्हें "प्रकृति पुत्र" के नाम से भी जाना जाता ह ब जनजाति मध्य-प्रदेश के घने जंगलों में निवास करती ह और उनका सभ्य अथवा बाह्य समाज से बहुत दूरी होती ह यही कारण ह कि ब जनजाति कि सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आज भी जीवंत ह ब जन-जीवन का आधार आर्थिकी ह अर्थात ब जनजाति को अपना जीवन निर्वाह करने के लिए अपनी अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से चलाना होता ह ब जनजाति के उत्पादन, उपभोग एवं वितरण कि काई भी जंगल ही होते हैं, जिससे ये लोग दनिक जीवन की विभिन्न वन्य सामग्रियों का संग्रहण करते हैं। ब जनजाति के आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि, जंगली उपज संग्रह, व मजदूरी पर आधारित ह जंगली उपज में तेंदू पत्ता, तेंदू, चार, हर्रा, गोंद, शहद, कोशुम, बहेरा, साल-बीज,लाख, जिरौजी, विभिन्न औषधीय जड़ी-बूटियाँ एवं फल-फूल त्यादि एकत्र करते हैं। न एकत्र वस्तुओं को वस्तु-विनिमय द्वारा और साप्ताहिक बाजार में बेच कर अपनी आर्थिक स्थिति को संचालित करते हैं। तेंदू पत्ता, मारती लकड़ियाँ, लाख, टिंबर एवं नॉन टिंबर त्यादिको जंगलों से एकत्र करने के बाद वन विभाग को भी बेचते हैं।

बैगा जनजाति के लोग आज भी शिकार करके अपने दैनिक जीवन के विभिन्न आवश्यकता को पूरा करते हैं। बैगा जनजाति के लोग जंगल से सुअर, कोटरा, हिरण, बारहसिंगा, चूहा, चिड़िया, जंगली भैंस आदि का शिकार कराते हैं। शिकार करने के लिए पारंपरिक उपकरणों का उपयोग करते हैं, जिसमें से कुछ उपकरण चैंप, गुलेल, गुंथना, करसा, भाला/बरछी, सांग, धनुष तीर कंदे, सुरी कंदा, पटकी कंदा, खुज्जी, कंदा थोंगा कंदा आदि हैं। बैगा जनजाति के लोग मछली पकड़ने के लिए अपने आस-पास के नदी-नाले में मछली पकड़ने के लिए जाते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति शिकार के लिए भी पारिस्थितिकी पर ही निर्भर रहती है।

इनकी आर्थिकी का दूसरा प्रमुख माध्यम कृषि है जिसे वन कृषि अथवा कुठ्ठर कृषि के नाम से जाना जाता है। वन कृषि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि यह कृषि पूर्णतः जंगलों पर ही निर्भर रहती है। जबकि कुठ्ठर कृषि के अंतर्गत कोदो, कुटकी इत्यादि खाद्य फसलों को उगाते हैं। कृषि के अंतर्गत खेती किए जाने वाले फसलें भी जंगली पारिस्थितिकी के अनुरूप होती हैं क्योंकि इन्हें जंगली पर्यावरण में ही उगाया जा सकता है। बैगा जनजाति के आर्थिक व्यवस्था के अंतिम माध्यम मजदूरी है जिसके अंतर्गत बैगा लोग वन विभाग में मजदूरी करके पैसे कमाते हैं। इस प्रकार यह देख सकते हैं कि बैगा जीवन कि आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः तीन माध्यमों पर आश्रित है जिसमें वन कृषि, जंगली उपज तथा मजदूरी आती हैं। बैगा जीवन का ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं जहाँ पर स्थानीय पारिस्थितिकी का स्थान न हो।

बैगा जनजाति का सांस्कृतिक पक्ष परम्परागत रीति-रिवाजों, प्रथाओं एवं लोक कलाओं से परिपूर्ण है। बैगा समाज में एक सामूहिक पुजा स्थल होता है जो किसी खास स्थान को निर्धारित करके बनाया गया है। इस स्थान को आदिवासीय भाषा में सरना अथवा अखरा कहते हैं। परंतु चांडा गाँव में बैगा समाज के सामूहिक पुजा स्थल को स्थानीय शब्द में '*खरिका*' कहते हैं। यह स्थान भी गाँव के के बाहर जंगल की सीमा से लगा हुआ है। इस स्थान के जंगल में होने कि प्रमुख तर्क यह है कि बैगा जनजाति के

अधिकांश देवी-देवताओं और पूर्वजों निवास एवं संबंध जंगल से है। अर्थात बैगा समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों का जुड़ाव पारिस्थितिकी से होता है।

बैगा समाज में प्रचलित पर्व एवं त्यौहार भी पारिस्थितिकी से पूर्णतः प्रभावित हैं। अर्थात इनके पारंपरिक त्यौहारों में स्थानीय पर्यावरण का प्रमुख योगदान होता है। जैसे- तीज का त्यौहार- यह बैगा महिलाओं द्वारा मनाया जाता है जिसकी यह मान्यता है कि इससे पति की आयु में वृद्धि हो जाती है। इस त्यौहार में जंगल से पेड़-पौधे के रूप में *तिराइयाँ फूल, झागड़हा फूल, बेल पत्ती, नारियल एवं काशी* फूलइत्यादि का पुजा के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार कृषि के लिए मनाया जाने वाला हरियाली त्यौहार भी नृपारिस्थितिकी का एक अद्भुत उदाहरण है जिसके माध्यम से बैगा और स्थानीय पेड़-पौधों से संबंध दर्शाता है। इस पर्व को फसल के लग जाने के बाद मनाया जाता है। जिसमें जंगल के कुछ पेड़-पौधों कि पत्तियों को पुजा के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे- बाँस पत्ती,साल की पत्ती, भवंरमाल पत्ती,हांसिया ढ़ेड़ी पत्ती एवं जोगी लट्टी पत्ती इत्यादि। इनके प्रति बैगा लोगों का विश्वास होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बैगा समाज कि ऐसी कोई भी संस्कृति नहीं है जो पारिस्थितिकी से अछूता है। इनके सामाजिक मान्यताओं, परम्पराओं, लोक कलाओं, गीतों इत्यादि में किसी न किसी रूप में स्थानीय पर्यावरण का हस्तक्षेप रहा ही है, जो बैगा और प्रकृति के अटूट संबंध और विश्वास को बताता है।

जैसा की द्वितीय अध्याय में विद्यार्थी के द्वारा प्रतिपादित "प्रकृति-मानव-आत्मा संकुल" की अवधारणा को जनजातीय समाज कि प्रमुख विशेषता को दर्शाती है। ए. पी. सिंह ने गणितीय माध्यम से प्रकृति-मानव-आत्मा संकुल को एक स्थायी अवधारण माना है और इनका कहना है कि इसके तत्व हमेशा स्थायी बने रहते हैं। ठीक इसी प्रकर बैगा जनजाति में प्रकृति-मानव-आत्मा संकुल के तत्व हमेशा स्थायी बने रहते हैं। बैगा जनजाति कि संस्कृति में प्रकृति और आत्मा का समावेश होता है, जिसमें बैगा

स्थानीय प्रकृति पर पूर्णतः निर्भर होता है। बैगा अपने आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करता है, जिससे कारण वह परिस्थिति को अपने समाज और संस्कृति का हिस्सा मानता है।

बैगा जनजातियों के देवी-देवताओं और पूर्वजों के संबंध में यह मान्यता है कि ये हमेशा से इनके आस-पास ही निवास करते हैं और अपने पूर्वास्थानों का भ्रमण करते हैं। इसलिए बैगा लोग आत्माओं पर भी विश्वास करते हैं और अपने पूर्वजों कि पुजा करते रहते हैं, ताकि वे खुश रहे और उनपर अपनी कृपा बनाए रखें। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बैगा मानव का प्रकृति और आत्मा से अटूट संबंध होता है और तीनों एक दूसरे पर आश्रित एवं प्रभावित होते रहते हैं। इरा प्रकार ये तीनों मिलकर एक प्रकार का संकुल बनते है, जिसे "प्रकृति-मानव-आत्मा संकुल" कहा जाता है।

प्रकृति x मानव x आत्मा = संस्कृति

उपरोक्त अध्यायों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बैगा का आर्थिक जीवन पूर्णतः स्थानीय पारिस्थितिकी पर निर्भर करती है। यदि बैगा जनजाति को B से दर्शाये और बैगा के आर्थिक जीवन को e तथा पारिस्थितिकी को n मान ले तो बैगा का आर्थिक व्यवस्था पारिस्थितिकी के समानुपातिक होगी।

$$Be \propto n \qquad (1)$$

इसी प्रकार बैगा का सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन (s), धार्मिक जीवन (r) और लोक कलाएं (a) भी पारिस्थितिकी के समानुपातिक होंगी। अतः इसे निम्न रूप में लिख सकते हैं-

$$Bs \propto n \qquad (2)$$

$$Br \propto n \qquad (3)$$

$$Ba \alpha n \qquad (4)$$

यदि (1), (2), (3) और (4)

$$n = Be + Bs + Br + Ba$$

यदि बैगा के सम्पूर्ण जीवन को $B\ell$ मान ले तो ,

$$B\ell = \Sigma n\ Be + Bs + Br + Ba$$

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि बैगा जनजाति का आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक एवं लोक परम्पराएँ और कलाएं वहाँ के स्थानीय पारिस्थितिकी पर पूर्णतः निर्भर है, उसके बिना इसके जीवन का अस्तित्व नहीं हो सकता है

सुझाव-

- बैगा जनजाति को उनके स्थानीय विश्वासों को जानने कि अवश्यकता है।
- बैगा जनजाति को सरकार द्वारा समझने कि आवश्यकता है। सरकार को यह चाहिए कि बैगा जीवन को सुरक्षित करें।
- बैगा जनजाति को इनके स्थानीय पारिस्थितिकी के साथ अन्तः संबंध स्थापित करने से रोकना नहीं चाहिए।
- इनके आर्थिक व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- बैगा के सांस्कृतिक पक्षों पर स्वतत्र प्रदान कि जानी चाहिए।